मानव संसाधन विकास

स्नातकोत्तर स्तर पर बहु - विषयक और जैवप्रौद्योगिकी के प्रयोग केन्द्रित क्षेत्र (सामान्य जैवप्रौद्योगिकी, कृषि जैवप्रौद्योगिकी, चिकित्सा जैवप्रौद्योगिकी, समुद्री जैवप्रौद्योगिकी, तंत्रिका विज्ञान, जैव रासायनिक इंजिनियरिंग और जैवप्रौद्योगिकी) में अपेक्षित विशिष्ट/प्रशिक्षित मानव संसाधन का सृजन करने और स्नातकोत्तर स्तर, पीएच.डी स्तर तथा पोस्ट डॉक्टरोल स्तर पर छात्रवृत्तियाँ/फैलोशिप देने के लिए कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

डॉक्टरेट स्तर पर मानव संसाधन का सृजन करने के लिए जूनियर रिसर्च फैलोशिप के लिए एक नया कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। पोस्ट डॉक्टरॉल फैलोशिप कार्यक्रम, लघु अवधि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, जैवप्रौद्योगिकी में औद्योगिकी प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना की गई है। जैव वैज्ञानिक ओवरसीज एसोसिएट्स कार्यक्रम बहुत लोकप्रिय था और पुरस्कार के लिए चयन किये गए 27 मध्य कैरियर तथा वरिष्ठ वैज्ञानिकों में से अधिकतर ने इसका उपयोग किया है। विदेश से भ्रमण करने वाले वैज्ञानिक नामक कार्यक्रम का उपयोग अधिक से अधिक संस्थाएं कर रहीं हैं।

कार्यक्रमों की मुख्य बातें नीचे दी गई हैं

3.1 स्नातकोत्तर एम.एससी./एम.टेक प्रशिक्षण तथा अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम

इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्नातकोत्तर स्तर पर प्रशिक्षित मानव संसाधन का सृजन करना और छात्रवृत्तियाँ/फैलोशिप प्रदान करना है। वर्तमान में चल रहे स्नातकोत्तर जैव प्रौद्योगिकी शिक्षण पाठ्यक्रम निम्नलिखित हैं

- सामान्य जैवप्रौद्योगिकी में 30 एम.एससी पाठ्यक्रम
- कृषि जैवप्रौद्योगिकी 7 एम.एससी पाठ्यक्रम
- चिकित्सा प्रौद्योगिकी 1 एम.एससी पाठ्यक्रम
- समुद्री जैवप्रौद्योगिकी में 2 एम.एससी पाठ्यक्रम
- औद्योगिक जैवप्रौद्योगिक में 1 एम.एससी पाठ्यक्रम
- तंत्रिका विज्ञान में 3 एम.एससी पाठ्यक्रम (3/2 वर्षीय)
- जैव रासायनिक इंजीनियरिंग, जैव प्रक्रिया प्रौद्योगिकी और जैव प्रौद्योगिकी में 6 एम.टेक पाठ्यक्रम
- चिकित्सा जैवप्रौद्योगिकी में 1 एम.टेक पाठ्यक्रम
- चिकित्सा जैवप्रौद्योगिकी में 2 एकवर्षीय एम.डी/एम.एस प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम
- आण्विक और जैव रासायनिक जैवप्रौद्योगिकी में 1 एकवर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम
- आनुवंशिक इंजीनियरिंग और जैवप्रक्रिया विकास में 1 एकवर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम

चालू वर्ष के दौरान स्नातकोत्तर शिक्षण से संबंधित निम्नलिखित नए कार्यक्रमों को सहायता दी गई है

- 2 विश्वविद्यालयों को उनके चल रहे एम.एससी जैवप्रौद्योगिकी पाठ्यक्रमों को सुदृढ़ करने के लिए एकमुश्त वित्तीय सहायता दे दी गई है।
- 9 नए प्रस्ताव (2 एम.एससी जैवप्रौद्योगिकी, 4 एम.एससी कृषि जैवप्रौद्योगिकी, 1 एम.टेक समुद्री जैवप्रौद्योगिकी, 1 एम.वी.एससी पशु जैवप्रौद्योगिकी और 1 नियोजन एजेंसी के प्रस्ताव) अनुमोदन के अंतिम चरणों में हैं।

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों का प्रवेश लगभग 900 प्रतिवर्ष है। विभिन्न विश्वविद्यालयों, संस्थानों में विद्यार्थियों को प्रवेश जेएनयू, नई दिल्ली द्वारा आयोजित एक अखिल भारतीय सामूहिक प्रवेश परीक्षा के द्वारा और आईआईटीज में गेट (इंजिनियरी में सामान्य अभिरूचि परीक्षा) द्वारा 2 वर्ष/ 4 छमाही वाले एम.टेक पाठ्यक्रम एवं जैवरासायनिक इंजिनियरी एवं जैवप्रौद्योगिकी में 5 वर्षीय समेकित एम.टेक पाठ्यक्रम में जे ई ई (संयुक्त प्रवेश परीक्षा) के द्वारा दिया जाता है।

इस समय 55 स्नातकोत्तर शिक्षण कार्यक्रमों को नियमित रूप से सहायता दी जा रही है। 6 स्नातकोत्तर शिक्षण पाठ्यक्रम/कार्यक्रमों को संबंधित विश्वविद्यालयों/संस्थानों ने अपने हाथ में ले लिया है। आजतक 15 विश्वविद्यालयों/केन्द्रों को उनके स्नातकोत्तर शिक्षण पाठ्यक्रमों को सुदृढ़ करने के लिए गैर आवर्ती अनुदान (केवल उपकरणों के लिए) के अंतर्गत एकमुश्त सहायता दी गई है।

3.2 डी बी टी - जे आर एफ कार्यक्रम

स्नातकोत्तर शिक्षण कार्यक्रम और पोस्ट डॉक्टरॉल फैलो कार्यक्रम के बीच के अंतराल को दूर करने के लिए कार्यक्रम इस वित्तीय वर्ष से प्रारम्भ किया गया है। इस कार्यक्रम में उन 24 विश्वविद्यालयों/केन्द्रों से 43 जूनियर रिसर्च फैलोज का

चयन किया गया है जिनमें डी बी टी द्वारा सहायता से स्नातकोत्तर शिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। डी एस टी / सी एस आई आर के मानदंडों के अनुसार अनुसंधान फैलेशिप (जेआरएफ/एसआरएफ) प्रारम्भ में 3 वर्ष के लिए दी जाती है और अनुसंधान परियोजना की प्रगति के अनुसार इसे वार्षिक आधार पर पाचवें वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है। 30,000 रूपये प्रति फैलो प्रतिवर्ष की दर से उपभोज्य अनुदान दी जाती है। पीएच.डी फैलोज के चयन के लिए पुणे विश्वविद्यालय, पुणे में जेएनयू, नई दिल्ली द्वारा स्नातकोत्तर छात्रों की भर्ती के लिए आयोजित अखिल भारतीय सामूहिक जैवप्रौद्योगिकी प्रवेश परीक्षा जैसे केन्द्रित तंत्र का विकास किया गया है। यह कार्यक्रम अनुसंधान के लिए अत्यंत दक्ष मानव संसाधन का विकास करने और जैवप्रौद्योगिकी उद्योग की आवश्यकता को पूरा करने में सहायता करेगा।

3.3 पोस्ट डॉक्टरल फैलोशिप कार्यक्रम

पुनर्गठित डी बी टी पोस्ट डॉक्टरल फैलोशिप कार्यक्रम अप्रैल, 2001 से आईआईएससी बैंगलोर की सहायता से चलाया जा रहा है। यह कार्यक्रम और अधिक विश्वविद्यालयों/अनुसंधान एवं विकास संस्थानों में चालू हो गया है। इस कार्यक्रम में पोस्टडॉक्टरल फैलोशिप के लिए पहले वर्ष 11,000 रूपये प्रतिमाह और दूसरे वर्ष 11,500 रूपये प्रतिमाह तथा 5,000 रूपये प्रति पोस्ट डॉक्टर फैलो प्रतिवर्ष की दर से आकस्मिक अनुदान प्रदान किया जाता है। प्रत्येक वर्ष 2 बैचों में अधिकतम 75 पोस्ट डॉक्टर फैलोज का चयन किया जाता हैं। इस वर्ष के दौरान 2 बैचों में 56 पोस्ट डॉक्टर फैलोज का चयन किया गया है।

3.4 प्रशिक्षण

अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम

विभाग जैवप्रौद्योगिकी के बहुविषयक क्षेत्रों में अपेक्षित सुविधाएं और विशेषज्ञता रखने वाले विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थाओं में 2 से 4 सप्ताह की अवधि के अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सहायता देता है। पाठ्यक्रम जैवप्रौद्योगिकी के विभिन्न विशिष्ट विषयों में उभरती अनुसंधान तकनीकियों पर प्रयोगशाला में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करता है। इन पाठ्यक्रमों से कैरियर के मध्य में वैज्ञानिकों, उद्योग के प्रतिनिधियों, शिक्षण संस्थाओं के युवा संकाय, पोस्ट डॉक्टरल फैलोज और अनुसंधान एसोसिएट्स को लाभ मिलता है। इन अनुसंधानकर्ताओं को प्राप्त ज्ञान से उनके अनुसंधान एवं विकास के कार्यक्रमों का विकास करने और साथ ही अपने मूल संस्थानों में नई खोजें करने में सहायता मिलेगी। प्रत्येक शिक्षण पाठ्यक्रम के लिए लगभग 15 प्रतिनिधि चुने जाते हैं। वर्ष के दौरान 8 अल्पावधि शिक्षण पाठ्यक्रम और जैवप्रौद्योगिकी में आईपीआर पर एक सप्ताह की 3 कार्यशालाओं को सहायता दी गई है और 6 प्रस्ताव विचाराधीन हैं।

बायोटेक औद्योगिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

इस स्कीम का उद्देश्य जैवप्रौद्योगिकी स्नातकोत्तरों को उद्योगों में 6 माह की इनहाऊस प्रशिक्षण के द्वारा जैवप्रौद्योगिकी उद्योग की आवश्यकताओं के प्रति अनुकूल बनाना है।

इस कार्यक्रम में 5,000 रूपये प्रतिमाह प्रति प्रशिक्षार्थी की दर से छात्रवृत्ति दी जाती है। यह छात्रवृत्ति छात्रों के, विशेष रूप से उद्योगों में, कैरियर के अवसरों को बढ़ाता है। यह स्कीम मेसर्स बायोटेक कंसोर्टियम इंडिया लि0 की सहायता से चलाई जा रही है। इस वर्ष देश में विभिन्न बायोटेक उद्योगों में प्रशिक्षण के लिए 80 छात्रों को रखा गया है।

3.5 जैवप्रौद्योगिकी ओवरसीज एसोसिएटशिप

तकनीकी रूप से प्रशिक्षित मानव संसाधनों की क्षमता निर्माण के एक प्रयास में विभाग समुचित संख्या में वैज्ञानिक और तकनीकी मानव संसाधन विकास और जीवन विज्ञान तथा जैवप्रौद्योगिकी क्षेत्रों से संबंधित विषयों की गुणवत्ता प्राप्त कराने की सुविधा प्रदान करने के लिए जैवप्रौद्योगिकी ओवरसीज एसोसिएटशिप कार्यक्रम चला रहा है।

यह कार्यक्रम वैज्ञानिकों को भारत से बाहर अग्रणी शोध संस्थानों में जैवप्रौद्योगिकी के अग्रणी क्षेत्रों में उन्नत अनुसंधान करने का अवसर प्रदान करता है। ओवरसीज एसोसिएटशिप दो श्रेणियों नामतः दीर्घावधि (एक वर्ष की अवधि के लिए) और अल्पावधि (36 माह की अवधि के लिए) में प्रदान की जाती है।

वर्ष के दौरान 273 आवेदन पत्र प्राप्त हुए जिनमें से जाँच समिति ने 50 का चयन किया और अंततः चयन समिति द्वारा 27 आवेदनों की एवार्ड के लिए सिफारिश की गई जिनमे 14 अल्पावधि और 13 दीर्घ अवधि के लिए थे। 26 एसोसिएट्स ने अवार्ड का उपयोग किया है जिनमे से 23 मेजबान प्रयोगशाला में शामिल हुए हैं जबकि मार्च, 2005 से पहले 3 शामिल हो जाएंगे।

वर्ष 200405 के लिए अवार्ड के लिए विज्ञापन जारी किया जा चुका है और आवेदन पत्र प्राप्त हो रहे हैं।

3.6 विदेश के अतिथि वैज्ञानिकों के लिए कार्यक्रम

इस योजना में विदेश में अनुसंधान प्रयोगशालाओं में जैवप्रौद्योगिकी के अग्रणी क्षेत्रों में काम कर रहे प्रख्यात वैज्ञानिको को सहयोगात्मक अनुसंधान कार्यक्रम प्रारम्भ करने या प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने या शिक्षण क्रियाकलापों में भाग लेने के लिए भारत में अनुसंधान संस्थानों / विश्वविद्यालयों में तीन माह तक के लिए आमंत्रित किया जाता है। योजना जैवप्रौद्योगिकी

के अग्रणी क्षेत्रों में ज्ञान के वर्तमान स्थिति की साझेदारी करवाती है। यह देश में उपलब्ध भारतीय अवसंरचना और वैज्ञानिक विशेषता को बाहर के संसार में प्रदर्शित कराती है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत आण्विक जीवविज्ञान, आण्विक विषाणु विज्ञान, एंजियो जेनेसिस, इंटराफेमिलियर कैंसर में कोशिका मृत्यु, ट्यमौरो जेनेसिस और आनुवंशिक प्रीडिसपोजिशन के क्षेत्रों में सूचना का आदानप्रदान करने के लिए एनसीसीएस, पुणे में विदेश से 2 वैज्ञानिकों ने भारत भ्रमण किया है। इस भ्रमण ने रूपांतरित कॉम्प्लेक्स एसेम्बली से संबंधित विभिन्न अत्याधुनिक तकनीकियों पर सूचना के विभेदन के अवसर प्रदान किए।

3.7 छात्रवृत्तियाँ एवं पुरस्कार

कैरियर विकास के लिए जैवविज्ञान पुरस्कार

यह पुरस्कार 45 वर्ष से कम आयु वाले ऐसे वैज्ञानिकों के लिए प्रारम्भ किया गया है जो कृषि, जैवचिकित्सा और पर्यावरण विज्ञान सहित जैवविज्ञानों और जैवप्रौद्योगिकी में मूलभूत और अनुप्रयुक्त उत्कृष्ट अनुसंधान कर रहे हैं। प्रत्येक पुरस्कार में 1,00,000 रूपये की नकद राशि एक स्मृति चिन्ह और तीन वर्ष की अवधि के लिए 3,00,000 रूपये प्रतिवर्ष का अनुसंधान अनुदान है। योजना में प्रत्येक वर्ष 10 पुरस्कार तक की व्यवस्था है। इस वर्ष अर्थात 200405 के लिए पादप जैवप्रौद्योगिकी, चिकित्सा जैवप्रौद्योगिकी तथा अन्य क्षेत्रों में सात उत्कृष्ट वैज्ञानिकों का चयन किया गया। ये पुरस्कार पाने वाले हैं; डॉ0 गीता कश्यप वेमुगंती, एल वी प्रसाद, आई इंस्टीट्यूट, हैदराबाद; डॉ0 अमिता अग्रवाल, संजय गांधी पोस्टग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस लखनऊ ; डा0 तापस के कुन्डू, जवाहर लाल नेहरू सेंटर फार एडवांस्ड साईटिफिक रिसर्च सेंटर, बंगलौर; डॉ0 एन श्रीनिवासन, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बंगलौर; डॉ0 के सीकर, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बंगलौर; डा बनवारी लाल, दी इंनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली और डा0 ज्योति प्रकाश तमंग, सिक्किम गार्वेंट कॉलेज, गंगटोक, सिक्किम।

राष्ट्रीय महिला जैववैज्ञानिक पुरस्कार

महिलाओं को जीवविज्ञान को अपने कैरियर के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विभाग ने समाज के हित के लिए उनके उत्कृष्ट योगदान और अनुसंधान परिणामों के प्रयोग के लिए नेशनल वूमेन बायोसाइंस अवार्ड की स्थापना की है। अवार्ड 1999 से प्रत्येक वर्ष दिया जाता है।

जीवनपर्यंत योगदान, उत्कृष्ट अनुसंधान और समाज के हित के लिए अनुप्रयोग के लिए प्रतिवर्ष एक वरिष्ठ महिला जैववैज्ञानिक को एक वरिष्ठ महिला जैववैज्ञानिक पुरस्कार दिया जाता है। पुरस्कार में स्मृति चिन्ह और एक स्वर्ण पदक के साथ 1,00,000 रूपये भी होते हैं। 45 वर्ष से कम आयु वाले महिला वैज्ञानिकों को उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिवर्ष 2 युवा महिला जैववैज्ञानिक पुरस्कार दिए जाते हैं। प्रत्येक पुरस्कार में स्मृति चिन्ह और एक स्वर्ण पदक के साथ 50,000 रूपये होते हैं। नामांकन प्राप्त करने के लिए पुरस्कार का विज्ञापन राष्ट्रीय समाचार पत्रों और करंट साइंस में किया जाता है। विधिवत गठित चयन समिति विजेताओं का चयन करती है।

वर्ष 2004 के लिए 4 महिला वैज्ञानिकों (एक वरिष्ठ श्रेणी में, दो युवा श्रेणी में और एक विशेष पुरस्कार जैवप्रौद्योगिकी में जागरूकता के लिए महिला वैज्ञानिक को) दिया गया।

अब तक 20 महिला वैज्ञानिकों को ये अवार्ड मिल चुके हैं। 2004-05 के लिए अवार्ड इन लोगों को मिले हैं :

- डा0 विरोनिका रौड्रिग्यूज, टी आई एफ आर, मुंबई — वरिष्ठ
- डा0 तान्या दास, बोस इंस्टीट्यूट, कोलकाता — युवा
- डा0 रूबी जॉनएंटों, आर जी सी बी, थिरूवनंतपुरम — युवा
- डा0 दीप्ति दिलीप देवबागकर, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे — विशेष पुरस्कार

प्रतिष्ठित जैवप्रौद्योगिकीविद् पुरस्कार

उन सक्रिय सेवानिवृत्त वैज्ञानिकों की दक्षता का उपयोग करने के उद्देश्य से, जिन्होंने जैवप्रौद्योगिकी और संबंधित क्षेत्रों में उत्कृष्ट अनुसंधान योगदान दिया है और जो अपने अनुसंधान को जारी रखे हुए हैं, विभाग ने " प्रतिष्ठित जैवप्रौद्योगिकीविद् पुरस्कार " की एक नई योजना प्रारम्भ की है। एक समय में अधिकतम 3 वैज्ञानिकों को पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार की अवधि प्रारम्भ में 3 वर्ष की होगी जिसे पहले 3 वर्षों में वैज्ञानिक द्वारा किए गए कार्य की समीक्षा के आधार पर 2 वर्ष के लिए बढ़ाया जा सकता है। प्रत्येक विजेता मानदेय के रूप में 26,000 रूपये प्रतिमाह की अधिकतम राशि का हकदार होगा। इसके अतिरिक्त, विजेता के मानदेय और पेंशनरी लाभ, यदि कोई है, उसके द्वारा लिए गए अंतिम वेतन से अधिक नहीं होगा। इसके अतिरिक्त विजेता के सचिवीय सहायता, टेलीफोन, अंतरदेशीय यात्रा, स्टेशनरी आदि पर किए जाने वाले खर्च के लिए 50,000 रूपये प्रति वर्ष का आकस्मिक अनुदान भी दिया जाएगा। वैज्ञानिक को उसके द्वारा पुरस्कार के लिए प्रस्तावित अनुसंधान परियोजना का कार्यान्वयन करने के लिए एक अनुदान राशि भी दी जाएगी। यह पुरस्कार 2003 में प्रारम्भ किया गया था। अब तक यह पुरस्कार डा0 जी पदमनाबन, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस,

बंगलौर (2003) और प्रो0 एम विजयन, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बंगलौर (2004) को दिया गया है।

जीवविज्ञान छात्रवृत्तियाँ

सी बी एस ई 10 + 2 स्तर की परीक्षा के जीवविज्ञान/ जैवप्रौद्योगिकी के शिखर के छात्रों को, कैरियर के लिए जीवविज्ञान लेने के लिए उत्साहित करने के उद्देश्य से, 25 जीवविज्ञान छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं। प्रत्येक छात्रवृत्ति में 15,000 रूपये का नकद पुरस्कार, एक स्वर्ण पदक और एक प्रशस्तिपत्र होता है। पुरस्कार प्रत्येक वर्ष 28 फरवरी को मनाए जाने वाले राष्ट्रीय विज्ञान दिवस उत्सव पर दिया जाता है। वर्तमान वर्ष के लिए पुरस्कार के लिए 25 छात्रों का चयन किया गया है।

3.8 जैवप्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाना

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों, वैज्ञानिक समुदायों और सामान्य जनता में जैवप्रौद्योगिकी की क्षमता और विभिन्न क्षेत्रों में उसके अनुप्रयोग को लोकप्रिय करना है। विभाग विद्वानों द्वारा जैवप्रौद्योगिकी में लोकप्रिय भाषण आयोजित करने, अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं में जैवप्रौद्योगिकी में लोकप्रिय पुस्तकें लिखने; जीवविज्ञान/ जैवप्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान जरनलों के प्रकाशित करने; विभाग की सहायता से जैवप्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर कार्यक्रम चलाने वाली संस्थाओं द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाने के लिए अनुदान प्रदान करता है। विभाग देश और विदेश में आयोजित विज्ञान एवं तकनीकी प्रदर्शनियों और व्यापार मेलों में भी भाग लेता है।

इस वर्ष के दौरान भारत में तीन लोकप्रिय भाषण और 6 प्रदर्शनियों को अब तक सहायता दी गई है। मार्च, 2005 के अंत तक तीन और लोकप्रिय भाषणों को सहायता दी जाएगी और विभाग तीन और प्रदर्शनियों में भाग लेगा। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाने के लिए 25 विश्वविद्यालयों, अनुसंधान एवं विकास संस्थानों को सहायता दी जाएगी।

3.9 सेमिनारों/ संगोष्ठियों/सम्मेलनों को सहायता

विभाग विश्वविद्यालयों / अनुसंधान एवं विकास संस्थानों को जैवप्रौद्योगिकी के क्षेत्र में राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार / सम्मेलन / संगोष्ठी आयोजित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

इस वर्ष के दौरान अब तक 43 राष्ट्रीय और 9 अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार /संगोष्ठी /सम्मेलन आयोजित करने के लिए वित्तीय सहायता दी जा चुकी है। मार्च, 2005 के अंत तक 20 और सम्मेलनों को सहायता दी जाएगी। विभाग ने निर्मा विश्वविद्यालय, अहमदाबाद में 3 7 जनवरी, 2005 के दौरान आयोजित 92वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस को 15,00,000 रूपये प्रदान किए।

वैज्ञानिकों को अनुसंधान क्षेत्रों में वर्तमान विकासों पर अग्रणी अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ अन्योन्य क्रिया करने का अवसर देने के लिए जैवप्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विदेश में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने के लिए वैज्ञानिकों को यात्रा राशि प्रदान की जाती है। इस वर्ष दिसम्बर, 2004 तक 15 वैज्ञानिकों को यात्रा सहायता प्रदान की गई है और मार्च, 2005 के अंत तक 7 और वैज्ञानिकों को यात्रा सहायता दी जाएगी।